इकाई 4 : छत्तीसगढ़ी भाषा व साहित्य

पाठ 4.1 : सुरुज टघलत हे . . .

पाठ 4.2 : लोककथाएँ

पाठ 4.3 : नँदिया–नरवा मा तँउरत हे

इकाई 4 छत्तीसगढ़ी भाषा व साहित्य

शिक्षा और हमारे जीवन से भाषा का गहरा संबंध है। छत्तीसगढ़ की मुख्य भाषा छत्तीसगढ़ी है। इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। राज्य में आयोजित होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में छत्तीसगढ़ी भाषा और संस्कृति से संबंधित प्रश्न भी पूछे जाते हैं। छत्तीसगढ़ी भाषा का अपना समृद्ध साहित्य है, जिसमें यहाँ की संस्कृति व लोकजीवन की झलक मिलती है। छत्तीसगढ़ी के लोकसाहित्य और आधुनिक साहित्य की खूबसूरती से परिचय हो सके, आप छत्तीसगढ़ी साहित्य की खूबसूरती को महसूस कर सकें, पढ़कर भाषा की समझ विकसित कर सकें और पढ़ी हुई सामग्रियों में अपने विचारों, अनुभवों का समावेश कर अभिव्यक्त कर सकें, इन्हीं उद्देश्यों से इकाई में छत्तीसगढ़ी भाषा में लिखे ये पाठ शामिल किए गए हैं–

लोकसाहित्य के अंतर्गत दो लोककथाएँ **साँच ल आँच का** एवं **हिरन अउ कोलिहा** दी गई हैं। पहली लोककथा जीवन में परिश्रम, साहस और सूझबूझ के महत्त्व को व्यक्त करती है। दूसरी लोककथा पंचतंत्र की कथाओं की तरह तात्कालिक बुद्धि और चतुराई के उदाहरण प्रस्तुत करती है।

वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ी में काफी रचनाएँ लिखी जा रही हैं। यहाँ दी गई **सुरुज टघलत हे...** ऐसी ही एक कविता है। इस कविता में ग्रीष्मऋतु के स्वरूप और मानव जीवन पर उसके प्रभाव को सुंदर ढंग से चित्रित किया गया है। गज़ल छत्तीसगढ़ी साहित्य के लिए एक नई विधा है। इस विधा से बच्चों को परिचित कराने के लिए एक छत्तीसगढ़ी गज़ल **नँदिया–नरवा मा तँउरत हे** को इस इकाई में शामिल किया गया है। इस गज़ल में छत्तीसगढ़ की समरसता, संघर्षशीलता एवं ऐतिहासिकता का चित्रण है।

पाठ 4.1 : सुरुज टघलत हे . . .

पवन दीवान

*संत–कवि **पवन दीवान** का जन्म 01 जनवरी 1945 को ग्राम किरवई (राजिम) जिला गरियाबंद में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा बासिन, राजिम एवं फिंगेश्वर में हुई। उन्होंने हिंदी, संस्कृत एवं अंग्रेजी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। श्री दीवान प्रख्यात वक्ता और सहृदय साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ **अंबर का आशीष, मेरा हर स्वर इसका पूजन, फूल, छत्तीसगढ़ महतारी, मर–मर कर जीता है मेरा देश, मेरे देश की माटी, याद आते हैं गाँधी** आदि हैं।*

टघल–टघल के सुरुज
झरत हे धरती ऊपर
डबकत गिरे पसीना
माथा छिपिर–छापर।

झाँझ चलत हे चारो कोती
तिपगे कान, झँवागे चेथी
सुलगत हे आँखी म आगी
पाँव परत हे ऐती–तेती।

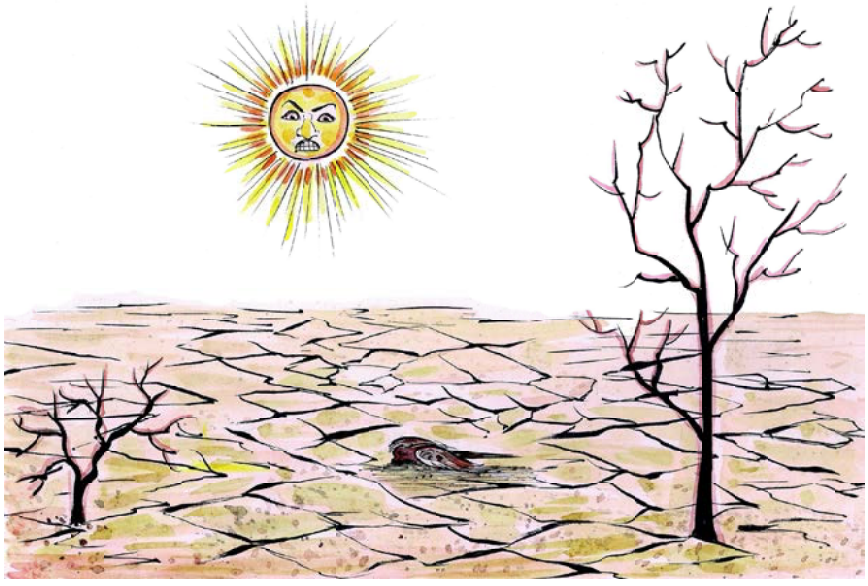

भरे पलपला, जरे भोंभरा
फोरा परगे गोड़ म
फिनगेसर ले रेंगत–रेंगत
पानी मिलिस पोंड़ म।

नदिया पातर–पातर होगे
तरिया रोज अँटावत हे
खँड म रुखवा खड़े उमर के
टँगिया ताल कटावत हे।

चट–चट जरथे अँगना बैरी
तावा बनगे छानी
टप–टप टपके कारी पसीना
नोहर होगे पानी।

साँय–साँय सोखत हे पानी
अड़बड़ मुँह चोपियावै
कुँवर ओठ म पपड़ी परगे
सिट्ठा–सिट्ठा खावै।

चारो कोती फूँके आगी
तन म बरगे भुर्रा
खड़े मँझनिया बैरी लागे
सबके छाँड़िस धुर्रा।

डामर लक–लक ले तीपे हे
लस–लस लस–लस बइठत हे
नस–नस बिजली तार बने हे
अँगरी–अँगरी अँइठत हे।

लकर–लकर मैं कइसे रेंगव
धकर–धकर जी लागे
हँकर–हँकर के पथरा फोरँव
हरहर के दिन आगे।

लहर–तहर सबके परान हे
केती साँस उड़ाही
बुड़बे जब मन के दहरा म
तलफत जीव जुड़ाही।

शब्दार्थ

डबकत – उबलता हुआ; **झँवागे** – झुलस गया; **नोहर** – दुर्लभ; **अँइठत** – ऐंठता हुआ, अकड़ता हुआ; **दहरा** – गहरा भाग; **तलफत** – तड़पता हुआ; **अँटावत** – सूखता हुआ; **चोपियावै** – प्यास लगने पर मुँह सूखना; **कुँवर** – कोमल, नरम; **लक–लक ले तीपना** – अत्यधिक गर्म होना; **फिनगेसर** – फिंगेश्वर (एक गाँव का नाम); **पोंड़** – एक गाँव का नाम।

अभ्यास

पाठ से

निर्देश : हिंदी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में तथा छत्तीसगढ़ी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी मातृभाषा में लिखिए।

1. ''टघल–टघल के सुरुज झरत हे'' इस पंक्ति का क्या आशय है?
2. कविता में तेज गर्मी के एहसास का भाव निहित है। इसे अपने शब्दों में लिखिए।
3. ग्रीष्मकाल में झाँझ के चलने से मनुष्य किस प्रकार प्रभावित होता है?
4. इन पंक्तियों का अर्थ लिखिए–

   ''चट–चट जरथे अँगना बैरी
   तावा बनगे छानी
   टप–टप टपके कारी पसीना
   नोहर होगे पानी।''
5. ग्रीष्मकाल में पानी का अभाव हो जाता है। कवि ने किन पंक्तियों में इस बात का उल्लेख किया है?
6. 'पलपला' और 'भोंभरा' शब्द के अर्थ में क्या अंतर है?
7. 'हर–हर के दिन आगे' ले आप का समझथव?

पाठ से आगे

1. ग्रीष्मऋतु में तालाब/नदी के सूख जाने पर जल–जीवों पर क्या प्रभाव पड़ता है? लिखिए।
2. गर्मी के दिनों में पानी की समस्या पर अपने आस–पास के अनुभवों को लिखिए।
3. नगरीकरण के कारण लगातार वृक्ष काटे जा रहे हैं। वृक्षों के कटने से प्रकृति पर पड़ने वाले प्रभावों का उल्लेख कीजिए।

C6BT47

4. टप–टप, रिमझिम, चम–चम, बिजली, घुमड़ते बादल, काली–घटा, साथ–साथ, हवा, उफनते नदी–नाले, झूमते पेड़ आदि शब्दों का प्रयोग करते हुए वर्षा ऋतु पर एक कविता/लेख लिखिए।

भाषा के बारे में

C6KP5U

1. निम्नलिखित छत्तीसगढ़ी मुहावरों के हिंदी अर्थ लिखिए।

   नोहर होना, फोड़ा परना, कान तिपना, आँखी मा आगी जलना, आगी फूँकना, पथरा फोरना, साँस उड़ना।

2. कविता में आए युग्म शब्दों को छाँटकर लिखिए जैसे–टप–टप, चम–चम। इसी तरह पाठ्यपुस्तक में हिंदी के भी युग्म शब्द आए हैं। उनकी सूची बनाइए।

योग्यता विस्तार

1. प्रकृति वर्णन से संबंधित अन्य कवियों की छत्तीसगढ़ी कविताओं/गीतों का संकलन कीजिए।
2. पवन दीवान जी की अन्य हिंदी कविताओं का संकलन कीजिए।

C6UK7H

3. छत्तीसगढ़ से प्रकाशित होने वाले समाचार–पत्रों में छत्तीसगढ़ी की प्रकाशित कविताओं का संकलन करें और उन पर अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए।
4. छत्तीसगढ़ के अन्य रचनाकारों की कविताएं संकलित कर पढ़िए।
5. जब किसी कविता की पंक्ति में अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन होता है तब वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। ''टघल–टघल के सुरुज, झरत हे धरती ऊपर'' में अतिशयोक्ति अलंकार है।

पाठ 4.2 : लोककथाएँ

संकलित

C74G95

आज भी वाचिक परंपरा में लोक साहित्य विद्यमान है। जिसे हम लोककथा, लोकगीत, लोकगाथा, कहावतें (हाना) मुहावरे, जनउला (पहेली) आदि के नाम से जानते हैं। ये लोक संपत्ति हैं। इनकी रचना किसने की यह अज्ञात है। लोक के इस ज्ञान को अब अनेक रचनाकारों द्वारा लिखा जा रहा है। इस पाठ में एक हल्बी और एक छत्तीसगढ़ी लोककथा दी जा रही है।

1. साँच ल आँच का (हल्बी लोककथा)

बहुत दिन पहिली के बात आय। एक झन किसान के बेटा हर एकेल्ला जंगल डहर जावत रहिस। सँगे–सँगवारी के बिना रद्दा कइसे रेंगे जाय, ये सोच के वोहर एकठन ठेंगा म तुमड़ी ल बाँध के जंगल के रद्दा रेंगे लागिस। रद्दा रेंगत–रेंगत ओला एकठन बड़का असन केकरा मिलिस। वोहर किसान के बेटा के सँगे–सँग कोरकिर–कोरकिर आए लागिस। तब किसान के बेटा हर ओला रद्दा ले दुरिहा मढ़ा के कहिस, ''तैं मोर सँग रेंगत–रेंगत कहाँ जाबे, इहिच्च करा रेहे राह, मोला अड़बड़ दुरिहा जाना हे, थक जाबे।'' ये कहि के वोहा अपन रद्दा रेंगे लागिस।

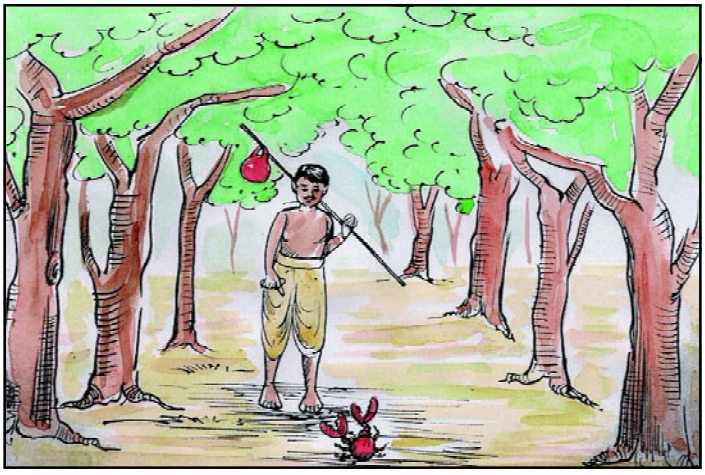

तब केकरा हर कहिस, भाई–ददा,
सँग म सँगवारी होही,
रद्दा थोकिन सरू होही।
मोला तैं सँग ले जाबे,
हरहिंछा तैं जिनगी पाबे।

केकरा के निक बात ल सुन के किसान के बेटा हर सोंचिस, चल आज इही ल सँगवारी मान लेथौं। अउ ओला तुमड़ी म धर के आगू डहर चल दिस।

कटकटाए जंगल। साँकुर रद्दा। काँटा–खूँटी ले बाँचत आगू रेंगे लागिस। रेंगत–रेंगत वो हर एकठन जंगल म पहुँच गिस, जिहाँ एकठन साँप अउ कउँवा के गजब दबदबा राहय, डर अउ तरास राहय। जउन ओ जंगल म जाय, वोहर कभू लहूट के नइ आय। साँप अउ कउँआ हर उनला मार के खा जाँय। उही पाय के ओ राज के राजा हर हाँका परवा दे रहिस,''जउन हर साँप अउ कउँआ ल मारही, वोकर सँग राजकुमारी के बिहाव कर दे जाही अउ ओला आधा राज के मालिक बना दे जाही।''

किसान के बेटा ल जब थकासी लागे लागिस, तब सोंचिस, रद्दा दुरिहा हे, चिटिक बिसराम कर ले जाय। ये सोंच के घमघमाए मउँहा के छइहाँ म सुरताये लागिस। सुग्घर हवा चलत रहिस। चिटिक बेरा म ओकर नींद परगे। उही मउँहा के रूख म साँप अउ कउँवा के बासा राहय। किसान के बेटा ल सुते देख के साँप हर अइस अउ ओला चाब दिस। साँप के चाबे ले तुरते वोकर मउत होगे। तब कउँवा हर रूख ले उतर के कहिस, ''तैं हर एकर पाँव ल चाबे हस, त पाँव डहर तोर अउ मूड़ डहर मोर।''

साँप अउ कउँवा के गोठ बात ल तुमड़ी म बइठे केकरा हर सुनत राहय। बेरा देख के धिरलगहा आइस अउ साँप के घेंच ल धर लिस अउ कहिस, ''तैं हर मोर सँगवारी ल जिया नहीं त तोरो परान नइ बाँचय।'' साँप छटपटाए लागिस, फेर वोकर छक्का–पंजा नइ चलिस। एला देख के कउँवा के टोंटा सुखाए लागिस। मउका देख के ठेंगा हर अइस अउ कउँवा ल ठठाये लागिस। कउँवा अधमरहा होगे। तब साँप अउ कउँवा हर किलोली करिन, ''हमला माफी दे दव सगा भाई, अब अइसन गलती कभू नइ करन।'' केकरा हर कहिस, ''जब परान संकट म हे, तब नत्ता–रिस्ता के सुरता आथे। माफी तभे मिलही जब हमर सँगवारी ल जियाबे। ''जब खुद के परान संकट म होथे, तब सब सरत मंजूर होथे। साँप तुरते किसान के बेटा के देह ले बिख ल तीर लिस।

साँप के बिख तीरे के बाद जब ओला होस अइस तब कहिस, ''अड़बड़ बेर ले सुत गेंव केकरा भाई, अब चलौ।'' केकरा हर सबो बात ल किसान के बेटा ल बताइस। किसान के बेटा हर कहिस, दुस्मन ल कइसे माफी केकरा भाई, ये कहि के साँप अउ कउँवा के मुड़ी ल काट के गमछा म गुरमेट के धर लिस।

ये सब ल उही लकठा म गाय चरावत धोरइ हर देखत रहिस। जइसे किसान के बेटा हर अपन रद्दा रेंगिस, धोरइ हर मरे साँप अउ कउँवा ल धर के राज–दरबार म पहुँच गे। राजा हर दरबार म बइठे राहय। राजा के आगू म जा के धोरइ हर कहिस, ''राजा साहब, मैं हर साँप अउ कउँवा ल मार डारेंव। ''ये कहिके मरे साँप अउ कउँवा के धड़ ल राजा के आगू म मढ़ा दिस।

धोरइ के बात ल सुन के राज–दरबार म उछाह के बादर छागे। आज अतियाचारी साँप अउ कउँवा ले मुक्ती मिलगे। राजा हर कहिस, ''हमर घोसना के पालन होना चाही। राजकुमारी के बिहाव धोरइ के सँग करे के तियारी करे जाय।'' राजा के हुकुम ले, चारों मुड़ा म राजकुमारी के बिहाव के तियारी होय लागिस। एक तो अतियाचारी साँप अउ कउँवा ले मुक्ती, दूसर तरफ राजकुमारी के बिहाव। ये खबर ह जंगल के आगी असन पूरा राज म बगरगे। परजा म दून खुसी छागे। राज भर म तिहार कस उछाह होगे। सबके मन म आनंद हमागे। चारों मुड़ा धोरइ के गुनगान होय लागिस। धोरइ खुस होगे। अब तो ओकर बिहाव राजकुमारी के सँग होही। अब वो राजा के दमाँद बन जाही। आधा राज के मालिक बन जाही। अब वोकर दुख के रात हर पहागे।

राज भर के छोटे–बड़े मनखे राजकुमारी के बिहाव म सामिल होए बर राज–दरबार पहुँचे लागिन। घूमत–घूमत किसान के बेटा घलो उही राज म पहुँचिस। राज म होवइया उछाह ल देख के वोहर दू–चार झन ल पूछिस, ये राज म अभी कउन तिहार मनावत हे भाई! सब झन एके बात कहिन, अतियाचारी साँप अउ कउँवा ल धोरइ हर मार डारिस। राजा साहब के घोसना के अधार म राजकुमारी के बिहाव धोरइ के सँग होए के तियारी हे।

ये बात ल सुन के किसान के बेटा अचरज म परगे। साँप अउ कउँवा ल तो मैं मारे हौं, ये धोरइ हर कइसे जान डारिस। वो हर कहिस, भाई, ''साँप अउ कउँवा ल तो मैं मारे हँव। धोरइ हर सच नइ कहत हे।''

ये बात हर ये कान ले वो कान होवत राज–दरबार म पहुँचगे। मंत्री हर राजा ल बताइस, एक झन परदेसी आए हे। वोहर कहिथे– ''साँप अउ कउँवा ल मैं मारे हौं।'' राजा कहिस– ''अइसे हे, त वो परदेसी ल राज–दरबार म हाजिर करे जाय। अउ धोरइ ला घलो बलाए जाय।''

राजा के आग्या ले किसान के बेटा अउ धोरइ ल राज–दरबार म पेस करे गिस। राजा हर किसान के बेटा ल कहिस, यदि साँप अउ कउँवा ल तैं मारे हस त सबूत पेस कर। किसान के बेटा हर अपन गमछा म बाँधे साँप अउ कउँवा के मुड़ी ल राजा साहब के आगू म रख दिस। राजा हर अचरज म परगे। साँप अउ कउँवा ल धोरइ मारे हे कि ये किसान के बेटा! राजा हर बिचार कर के कहिस, ''मैं कइसे मानँव, साँप अउ कउँवा ल तैं मारे हस।'' किसान के बेटा हर कहिस, मोर करा एकर गवाही हे। ये कहिके अपन तुमड़ी ले केकरा ल निकाल के एक तरफ राजा के आगू म मढ़ा दिस त दूसर तरफ ठेंगा ल धर दिस। वोकर गवाही ल देख के सबो दरबारी मन के मुँहू ले हाँसी फूटगे।

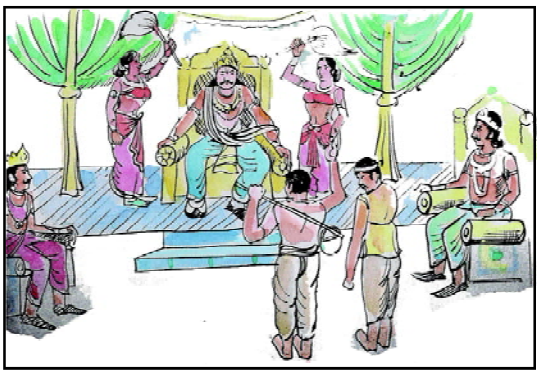

दरबारी मन ल हाँसत देख के केकरा हर सबो बात ल ओसरी–पारी बताए लागिस। केकरा के बात ल सुन के तो राजा के बिस्वास हर पक्का होगे। तब वोहर मंत्री ल कहिस, ''अब ये धोरइ बर का नियाव हे?'' मंत्री कहिस, ''धोरइ ल घलो अपन बात रखे के मउका दिए जाय।'' लेकिन धोरइ के मुँहू ले तो एको भाखा नइ फूटिस। वो का कही सकत हे? इहाँ तो दूध के दूध अउ पानी के पानी हो गे रहिस। धोरइ हर अपराधी कस मुड़ी गड़ियाये खड़े रहिस। त राजा सब बात ल बिन कहे समझगे। राजा हर कहिस, धोरइ ह हमर सँग धोखा करे हे। एकर सजा मिलना चाही। ये कहि के धोरइ ल जेल म धँधवा दिस अउ किसान के बेटा के सँग राजकुमारी के बिहाव कर दिस।

किसान के बेटा हर अब राजा के दमाँद बनके राजमहल म रहे लागिस। उहाँ सब सुख सुविधा होय के बाद वोकर मन ह उहाँ नइ लागत राहय। चोबीस घंटा बइठे–बइठे दिन हर घलो नइ पहाय। तब वोहर राजकुमारी ल कहिस, मोर ददा हर कहे रहिस, ''सदा मिहनत करके जिनगी बिताबे।'' ये बात सही आय, बिना मिहनत करे अनाज नइ खाना चाही। बिन मिहनत के भोजन खाना पाप बरोबर होथे। ये कहिके वोहर राजा के खेत म जाके काम–बूता करे लागिस।

किसान के बेटा ल खेत म काम करत देख के लोगन हाँसै। कतको मन तो वोकर खिल्ली उड़ाँय। ''हड़िया के मुँहू ल परई म ढाँकबे, मनखे के मुँहू म काला ढाँकबे।'' जे ठन मुँहू ते ठन बात। कोनो काहय, राजा के दमाँद होके मिहनत करथे, कतिक गुनिक मनखे हे। त कोनो काहय, मजूर के बेटा मजूरी नइ करही त अउ का करही। धीरे–धीरे ये बात राजा के कान म पहुँचगे।

राजा हर ओला दरबार म बला के कहिस, ''तैं हर अब किसान के बेटा नो हस, राजा के दमाँद आस। अब तोला ये तरह ले काम–बूता करना सोभा नइ देवय। परजा म बने बात नइ होवत हे।'' किसान के बेटा ह कहिस, ''महराज, मोला छीमा दूहू। काम करना कोनो अपराध नोहै। मैं अपन खेत म मिहनत करथँव। राजा के दमाँद होके जब मैं मिहनत करहूँ तब परजा के मन म मिहनत बर आदर के भाव जागही, अउ कोनो काम ल वोहर छोटे–बड़े नइ समझही। हमर राज म धन दिनदुनी रात चउगुनी बाढ़ही। जउन राज के राजा हर मिहनत करथे, ओ राज म कभू अकाल अउ भूखमरी नइ होवय।''

अपन दमाँद के बिचार ल सुन के राजा हर गदगद होगे। ओला अपन छाती ले लगा लिस। अब ओला बिस्वास होगे कि ये हर मिहनती के सँगे–सँग बिचारवान घलो हे। राजा हर दरबार म घोसना कर दिस, ''मोर इही दमाँद हर राज के उत्तराधिकारी होही।'' राजा के घोसना ल सुन के दरबार म उछाह छागे।

2. हिरन अउ कोलिहा (छत्तीसगढ़ी लोककथा)

एक बखत के बात आय। हिरन अउ कोलिहा पानी पीये बर जावत रहिन। कुँआ तीर जा के कोलिहा ह हिरन ले कहिस ''ये मितान! मैं हर पहिली खाल्हे डहर लटक के पानी पी लेथँव; पाछू तैं पानी पी लेबे।'' कोलिहा ह हिरन के पूछी ल धर के खाल्हे डहर लटक के पानी पीये लागिस। जब वो हर पानी पी डारिस तब हिरन के पारी आइस। जब कोलिहा हर हिरन के पूछी ल धरिस तब हिरन ह कुआँ डहर लटक के पानी पीये छपाक लागिस। आन देखिस न तान, कोलिहा हा हिरन ला कुआँ म ढकेल दिस। हिरन हर कुआँ म भदाक ले गिर गे। कुआँ ले थोरिक दुरिहा खेत म किसान मन बटुरा टोरत रहिन। कोलिहा हर किसान मन ला हूँत कराके बलाइस, अउ कहिस, ''एकठन हिरना हर ये कुआँ मा गिर गे हे।'' किसान मन कुआँ म गिरे हिरन ल अड़बड़ उदीम कर के बाहिर निकालिन। हिरन के तो परान निकल गे रहिस। ओला थोरिक दूरिहा म ले जा के नान–नान काटे लागिन। तब्भेच्च कोलिहा ह उँकर तीर म जाके कहिस, ''सँगवारी हो, एक भागा माँस महू ल नइ दुहू का?''

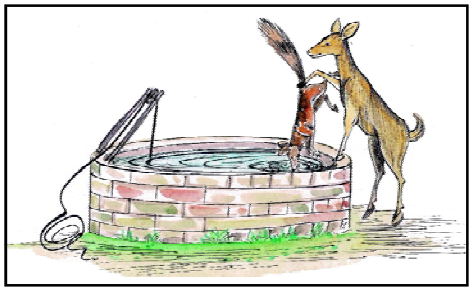

किसान मन कहिन, गजब मिहनत करके हमन हिरन ल कुआँ ले बाहिर निकाले हन, ये पाये के येमा पोगरी हिस्सा हमरे हे। कोलिहा हर कहिस, फेर हिरन के कुआँ म गिरे के खबर तो मैं हर दे हौं? वोकर ले का होथे, ''जे करे काम, ते खाये चाम।'' अइसे कहिके किसान मन इनकार कर दिन।

अब कोलिहा हा कहिस, ''ठीक हे भाई हो! जइसे तुँहर मरजी। तुमन मोला हिरन के माँस खाये बर नइ देना चाहौ त मत देवौ। फेर मोला नानकुन आगी तो दे दौ।''

किसान मन कोलिहा ल आगी दे दिन। कोलिहा हर आगी ल धरिस अउ किसान मन के बटुरा के खेत म फेंक दिस। बटुरा के खेत ह जरे लागिस। वोला देख के किसान मन अकबका गे। अउ आगी ल बुझाये बर खेत डहर दउँड़िन। जइसे किसान मन खेत डहर गइन कोलिहा हर हिरन के माँस ल पेट भर खाइस।

शब्दार्थ

एकेल्ला – अकेला; **डहर** – रास्ता; **सँगवारी** – साथी; **रद्दा** – रास्ता; **मढ़ा के** – रखकर; **अड़बड़** – बहुत; **तुमड़ी** – लौकी का सूखा खोल; **कटकटाए** – बहुत घना; **साँकुर** – सँकरा; **हाँका पारना** – मुनादी करना; **घमघमाए** – आच्छादित; **सुग्घर** – सुन्दर; **चिटिक बेरा** – थोड़ा समय; **रूख** – वृक्ष; **बासा** – निवास; **टोंटा** – गला; **मुड़ी** – सिर; **उछाह** – उत्साह; **धोरइ** – चरवाहा (एक तरह की जाति); **ओसरी–पारी** – एक के बाद एक, क्रमशः; **गुनिक** – गुणवान; **बिख** – विष, जहर; **कोलिहा** – सियार; **खाल्हे** – नीचे; **बटुरा** – मटर; **थोरिक** – थोड़ा; **तीर** – पास; **नानकुन** – छोटा–सा; **आगी** – आग; **तरास** – भय; **उदीम** – प्रयास।

अभ्यास

पाठ से

निर्देश : हिंदी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में तथा छत्तीसगढ़ी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी मातृभाषा में लिखिए।

1. किसान के बेटे को साथ ले चलने के लिए केकड़े ने क्या तर्क दिया?
2. केकड़ा और ठेंगा ने किसान के बेटे की रक्षा किस तरह की?
3. साँप और कौए के आतंक से पूरा राज्य किस तरह प्रभावित था?
4. किसान के बेटे ने परिश्रम के महत्त्व को किस तरह परिभाषित किया?
5. हिरण और कोलिहा ने कुएँ से पानी पीने के लिए कौन सी तरकीब सोची?
6. हिरण को कुएँ में धकेलने के पीछे कोलिहा का क्या उद्देश्य रहा होगा?
7. कोलिहा के द्वारा माँस माँगने पर किसानों ने क्या कहा?
8. धोरइ अपन बात ल काबर नइ रखिस?
9. कोलिहा हर बटुरा के खेत म आगी काबर लगा दिस?

पाठ से आगे

1. जनजाति समूह के व्यक्तियों में कौन–कौन सी विशेषताएँ होती है? बड़े–बुजुर्गों से चर्चा करके लिखिए।
2. छत्तीसगढ़ में लोककथा कहने के साथ–साथ लोकगीत भी गाए जाते हैं। किन्हीं पाँच लोकगीतों के नाम लिखकर एक–एक उदाहरण भी दीजिए।
3. ''जो कोई साँप और कौए को मारेगा, उससे मैं राजकुमारी का विवाह कराऊँगा।'' क्या राजा की यह घोषणा उचित थी? अपने विचार दीजिए।
4. पानी पीये बर हिरन हर कोलिहा के सँग दिस, फेर कोलिहा के पारी आए ले वोहर हिरन ल कुँआ म ढकेल दिस। कोलिहा के अइसन आचरन के बारे म अपन बिचार लिखौ।

C7DCAS

5. खेत की खड़ी फसल में आग लग जाने पर उसे बुझाने के कौन–कौन से तरीके हो सकते हैं? विस्तारपूर्वक लिखिए।

भाषा के बारे में

1. निम्नलिखित छत्तीसगढ़ी शब्दों को हिंदी में लिखिए?

   ओसरी–पारी, घटाटोप, नेकी–बदी, अधमरहा, घेंच, अचरज, ठट्ठा–दिल्लगी, डहर, हुरहा, मुड़ी, नजिक आदि।

2. अपने क्षेत्र में प्रचलित किन्हीं पाँच लोकोक्तियों का संग्रह करके उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

3. अव्यय शब्द– संस्कृत भाषा में कुछ अव्यय शब्द होते हैं, जिन्हें प्रयोग में लाते समय उनके मूल स्वरूप में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। ठीक उसी तरह छत्तीसगढ़ी भाषा में भी अव्यय शब्द होते हैं, जिनके रूप नहीं बदलते, जैसे– डहर, तब्भे, सेती, बर, कनि आदि। इसी तरह छत्तीसगढ़ी के अन्य अव्यय युक्त शब्दों को ढूँढकर उनके अर्थ भी लिखिए।

C7H8CF

4. पाठ में आए क्रिया शब्दों को लिखकर उनका हिंदी में अनुवाद कीजिए।

   जैसे : कहिस – कहा; खइस – खाया; होइस – हुआ।

योग्यता विस्तार

C7H4E3

1. आप अपने क्षेत्र में प्रचलित दो लोककथाओं को अपनी मातृभाषा में लिखिए।
2. हिंदी भाषा में लिखी गई किन्हीं दो लोककथाओं का अनुवाद अपनी मातृभाषा में कीजिए।
3. लोककथा किसे कहते हैं? यह लोकगीतों से किस प्रकार भिन्न होती है? शिक्षक से चर्चा कीजिए।

4. छत्तीसगढ़ क्षेत्र में अनेक लोकगाथाएँ गाई जाती हैं। कुछ लोकगाथाओं एवं उनके प्रसिद्ध गायकों के नाम लिखिए।

क्र. सं.	लोकगाथा का नाम	लोकगाथा गायक/गायिका
1.		
2.		
3.		
4.		
5.		

5. अपने पुस्तकालय से लोककथाओं की पुस्तकें लेकर उनमें दी गई लोककथाओं को पढ़िए।

छत्तीसगढ़ी ग़ज़ल

पाठ 4.3 : नँदिया–नरवा मा तँउरत हे

मुकुंद कौशल

C85ZFQ

मुकुन्द कौशल *का जन्म 7 नवम्बर सन् 1947 को दुर्ग नगर में हुआ। कौशल जी, हिंदी और छत्तीसगढ़ी के कुशल कवि एवं सुपरिचित गीतकार हैं। उन्होंने छत्तीसगढ़ी ग़ज़लों को एक नई पहचान दी। उनकी प्रमुख प्रकाशित रचनाएँ* ***भिनसार*** *(छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह),* ***लालटेन जलने दो*** *(हिंदी काव्य संग्रह),* ***हमर भुइयाँ हमर अगास*** *(छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह)* ***मोर ग़ज़ल के उड़त परेवा*** *(छत्तीसगढ़ी ग़ज़ल संग्रह),* ***कोरवस*** *(छत्तीसगढ़ी उपन्यास) हैं।*

नँदिया–नरवा मा तँउरत हे, मनखे के बिसवास इहाँ।
पथरा–पथरा मा लिक्खे हे, भुइयाँ के इतिहास इहाँ।।

तीपत भोंभरा, बरसत पानी के हम्मन टकराहा हन,
लइका मन सँग खुडुवा खेलत रहिथे बारामास इहाँ।

पूस–माघ मा जाड़ जनावै, अँगरा कस बइसाख तपै,
बइहा होके धमसा कूदै सावन मा चउमास इहाँ।

ये भुईयां के बात अलग हे, काए बतावौं गुन येकर,
बोहे रहिथें नान्हे–नान्हे, लइका मनन अगास इहाँ।

पीरा फीजे जिनगानी के, धुरघपटे अँधियारी मा,
हितवाई के दीया करथे, अंतस मा परकास इहाँ।

ये ममियारो राम–लखन के, बानासुर के राज इही,
राम लखन–सीता आइन हें, पहुना बन के खास इहाँ।

हर चौका ले कोन्टा तक मा, माढ़े हें देवता धामी,
'कौसल' इहँचे गंगा मैया, अउ पाबे कैलास इहाँ।

टिप्पणी

बाणासुर : पुराणों के अनुसार असुरराज बाणासुर बलि वैरोचन के सौ पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र था, जो पाताललोक का राजा था। शोणितपुर अथवा लोहितपुर उसकी राजधानी थी। कृष्ण के साथ बाणासुर का युद्ध हुआ था जिसमें कृष्ण ने बाणासुर के सहस्त्र हाथों में से दो को छोड़कर शेष काट डाले थे। उसे महाबलि सहस्त्रबाहु तथा भूतराज भी कहा जाता था।

शब्दार्थ

नरवा – नाला; **तँउरत हे** – तैर रहा है; **पथरा** – पत्थर; **भुइयाँ** – जमीन; **भोंभरा** – सूर्य के ताप से गर्म धूल; **टकराहा** – आदी, अभ्यस्त; **खुडुवा** – कबड्डी के समान एक खेल; **नान्हे–नान्हे** – छोटे–छोटे; **फींजे** – भीगा हुआ; **माढ़े हे** – रखे है; **पहुना** – मेहमान; **अगास** – आकाश, आसमान; **धुरघपटे** – अत्यंत घना।

अभ्यास

पाठ से

निर्देश : हिंदी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में तथा छत्तीसगढ़ी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी मातृभाषा में लिखिए।

1. ''नँदिया–नरवा मा तँउरत हे, मनखे के बिसवास इहाँ'' इस पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।
2. ''तीपत भोंभरा बरसत पानी के हम्मन टकराहा हन'' में छत्तीसगढ़ के लोगों की कौन–सी विशेषता को दर्शाया गया है?
3. ''लइका मन अगास ला बोहे रहिथे'' के का मतलब हे?
4. कवि हर छत्तीसगढ़ ल राम–लखन के ममियारो कोन अधार म केहे हे?

पाठ से आगे

C8EVHD

1. छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए।
2. छत्तीसगढ़ में कुछ ऐसे स्थल हैं, जो देवस्थलों के रूप में जाने जाते हैं। अपने गाँव के किसी एक देवस्थल के संबंध में अपनी धारणाएँ लिखिए।
3. विपरीत परिस्थितियों में भी यहाँ के निवासियों का हृदय किन मानवीय गुणों से परिपूर्ण रहता है?
4. अपने क्षेत्र में खेले जाने वाले कुछ पारंपरिक खेलों के संबंध में आपको जानकारी होगी। उन खेलों के संबंध में निम्नानुसार जानकारी दीजिए–

क्र. सं.	खेल का नाम	खिलाड़ियों की संख्या	खेलने के तरीके	प्रमुख विशेषताएँ

भाषा के बारे में

1. छत्तीसगढ़ी के निम्नलिखित क्रियापदों को हिंदी में लिखिए–

   जैसे ''बोहे रहिथे'' अर्थात्–धारण किया रहता है।

   (क) माढ़े हे – .....

   (ख) खेलत रहिथे – .....

   (ग) धमसा कूदै – .....

   (घ) लिक्खे हे – .....

   (ङ) तउँरत हे – .....

C8NRJ1

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ी और हिंदी में लिखी गई कुछ अन्य ग़ज़लों का संग्रह कीजिए और अपनी कक्षा में सुनाइए।
2. आपके गाँव में विराजित लोक देवी–देवताओं के नाम लिखिए।
3. अपने आस–पास के ऐतिहासिक स्थलों के बारे में अपने बड़े–बुजुर्गों से जानकारी प्राप्त कीजिए।
4. यहाँ दिए गए अन्य रचनाकारों की ग़ज़ल भी पढ़िए–

C8XMKN

छत्तीसगढ़ी गज़ल

बार के दिया संगी, अँगना मा घरके
फेंकव अँधियारी ला, झउँहा मा भरके।

अलगू अउ जुम्मन कहाँ बइठे होंहीं।
खोजत हे प्रेमचंद गाँव मा उतर के।

कारखाना चर डारिस जंगल ला भइया।
दउँरत हे खेत डहर जंगल ला चरके।

फोटुच मा बड़ सुघ्घर दिखथे समारू।
माटी के भिथिया अउ छानी खदर के।

डॉ. जीवन यदु

हिंदी गज़ल

कैसे मंजर सामने आने लगे हैं,
गाते–गाते लोग चिल्लाने लगे हैं।

अब तो इस तालाब का पानी बदल दो,
ये कँवल के फूल कुम्हलाने लगे हैं।

वो सलीबों के करीब आए तो हमको
कायदे–कानून समझाने लगे हैं।

एक क़ब्रिस्तान में घर मिल रहा है
जिसमें तहख़ानों में तहख़ाने लगे हैं।

दुष्यन्त कुमार

शब्दार्थ

सलीब – सूली मंजर – दृश्य